ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

शोध की विभिन्न प्रविधियां

PG / M.A. 3rd Semester

CC-12, Historiography, History of Bihar & Research Methodology

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

PATNA UNIVERSITY, PATNA

प्रत्येक अनुसंधान एक विशेष प्रकार की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है । यदि समस्या की प्रकृति ऐतिहासिक है तो हम उसे ऐतिहासिक अनुसंधान कहेंगे, यदि वर्णनात्मक है तो वर्णनात्मक अनुसंधान और यदि समस्या की प्रकृति प्रयोगात्मक है तो उसे प्रयोगात्मक अनुसंधान कहेंगे । अनुसंधान की विधियों का वर्गीकरण विद्वानों ने अनेक प्रकार से किया है । इनमें सामान्य रूप से अधिकांश विद्वान निम्नलिखित वर्गीकरण को मानते हैं ।

1. **ऐतिहासिक अनुसंधान** :- ऐतिहासिक अनुसंधान का संबंध भूत से है तथा भविष्य को समझने के लिए भूत का विश्लेषण करता है ।

   जाँन डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार "ऐतिहासिक अनुसंधान का संबंध ऐतिहासिक समस्याओं के वैज्ञानिक विश्लेषण से है । इसके पद भूत के संबंध में एक नई सूझ पैदा करते हैं जिसका संबंध वर्तमान और भविष्य होता है ।"

ऐतिहासिक विधि का मूल उद्देश्य :

- भूत के आधार पर वर्तमान को समझना एवं भविष्य के लिए सतर्क होना है । अधिकांश वस्तुओं का कोई ना कोई ऐतिहासिक आधार होता है ।

- दूसरा प्रमुख उद्देश्य शिक्षा मनोविज्ञान अथवा अन्य सामाजिक विज्ञान में चिंतन को नई दिशा देने एवं नीति निर्धारण करने में सहायता देना है।
- वैज्ञानिकों की भूतकालीन तथ्यों के प्रति जिज्ञासा की तृप्ति एवं भूत, वर्तमान तथा भविष्य का संबंध स्थापन है।

इतिहास भूतकालीन घटनाओं के परिणामों को स्पष्ट करते हुए उसके गुण-दोषों से परिचित कराता है। ऐतिहासिक अनुसंधान शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में स्थित वर्तमान क्रियाओं और प्रवृत्तियों के आधार पर समय का विवेचन करता है, इससे किसी उलझी हुई समस्या का हल ढूंढने में सहायता मिलती है।

2.वर्णनात्मक अनुसंधान :- शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसंधान का सबसे अधिक महत्व है। **मोले के अनुसार** "वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण संबंधी शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक व्यवहार में आता है। यह एक विस्तृत वर्गीकरण है जिसके अंतर्गत अनेक विशिष्ट विधियां तथा प्रक्रियाएं आती हैं, उद्देश्य की दृष्टि से सब लगभग समान होती है अर्थात अध्ययन से संबंधित विषय के स्तर का निर्धारण करना।"

वर्णनात्मक अनुसंधान के उद्देश्य :-

- वर्तमान स्थिति का स्पष्टीकरण तथा भावी नियोजन अथवा परिवर्तन में सहायता करना
- भावी अनुसंधान के प्राथमिक अध्ययन में सहायता करना जिससे अनुसंधान को अधिक नियंत्रित एवं वस्तुनिष्ठ बनाया जा सके।
- मानव व्यवहार के विभिन्न पक्षों की जानकारी प्राप्त करना।
- मनोवैज्ञानिक विशेषताओं से परिचय प्राप्त करना तथा शैक्षिक नियोजन में सहायता करना।

वर्णनात्मक अनुसंधान की विशेषताएं :-

i. इसके अंतर्गत एक ही समय में अधिकांश मनुष्य के विषय में आंकड़े प्राप्त किए जाते हैं।

ii. इसका संबंध किसी व्यक्ति विशेष से ना होकर संपूर्ण जनसंख्या अथवा उसके न्यायदर्श से होता है।

iii. इसके अंतर्गत स्पष्ट परिभाषित समस्या पर कार्य करते हैं।

iv. इसका एक विशिष्ट उद्देश्य होता है

v. इसके लिए विशिष्ट एवं कल्पना पूर्ण नियोजन आवश्यक है।

vi. इसमें आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण में सावधानी रखते हैं।

vii. इसके अंतर्गत किसी वैज्ञानिक नियमों का निर्धारण नहीं करते अपितु समस्या के समाधान हेतु उपयोगी सूचना प्रदान करते हैं।

viii. वर्णनात्मक अनुसंधान विशेष सरल एवं अत्यंत कठिन दोनों प्रकार का हो सकता है।

ix. वर्णनात्मक अनुसंधान गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है।

प्रयोगात्मक अनुसंधान :-

वास्तव में प्रयोगात्मक अनुसंधान ही सबसे वैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति है। यह एक उन्नत विधि है जिसके अंतर्गत हम किसी समस्या का समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि अर्थ तथा उपयोगिता की दृष्टि से अत्यंत व्यावहारिक है। प्रयोगात्मक अनुसन्धान इस तथ्य का स्पष्टीकरण करता है कि जब सभी संबंधित चरों अथवा परिस्थितियों पर सावधानीपूर्वक नियंत्रण करके प्रयोगात्मक चर में परिवर्तन किया जाये तो क्या निष्कर्ष प्राप्त होगा। **चैपिन के अनुसार** "नियंत्रित दशाओं में किए गए निरीक्षण ही प्रयोग है।

प्रयोगात्मक विधि के मुख्य लक्षण :-

i. यह विधि एक चर की धारणा पर आधारित है।

ii. जहां तक चरों पर नियंत्रण संभव है इस विधि को सफलतापूर्वक प्रयोग में ला सकते हैं, यह सभी विज्ञानों में प्रयोग में लाई जा सकती है।

iii. मानव परिस्थितियों में सभी चरों पर नियंत्रण नहीं कर सकते इस कारण सभी समस्याओं का प्रयोगात्मक अध्ययन भी नहीं किया जा सकता है।

प्रयोगात्मक विधि के विभिन्न पद :

1) समस्या से संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण
2) समस्या का चयन एवं परिभाषीकरण
3) परिकल्पना का निर्माण, चरों की व्याख्या
4) प्रयोगात्मक योजना का निर्माण
5) प्रयोग करना
6) आँकड़ो का संकलन एवं सारणीयन
7) प्राप्त निष्कर्ष का मापन
8) प्राप्त निष्कर्ष का विश्लेषण एवं व्याख्या
9) विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकालना
10) निष्कर्ष की विधिवत रिपोर्ट लिखना।